Fazaile Ahle Bait (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 461
Weekly Booklet : 461

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 34 साल पहले (1992) का बयान

फ़ज़ाइले अहले बैत

सफ़हात : 16

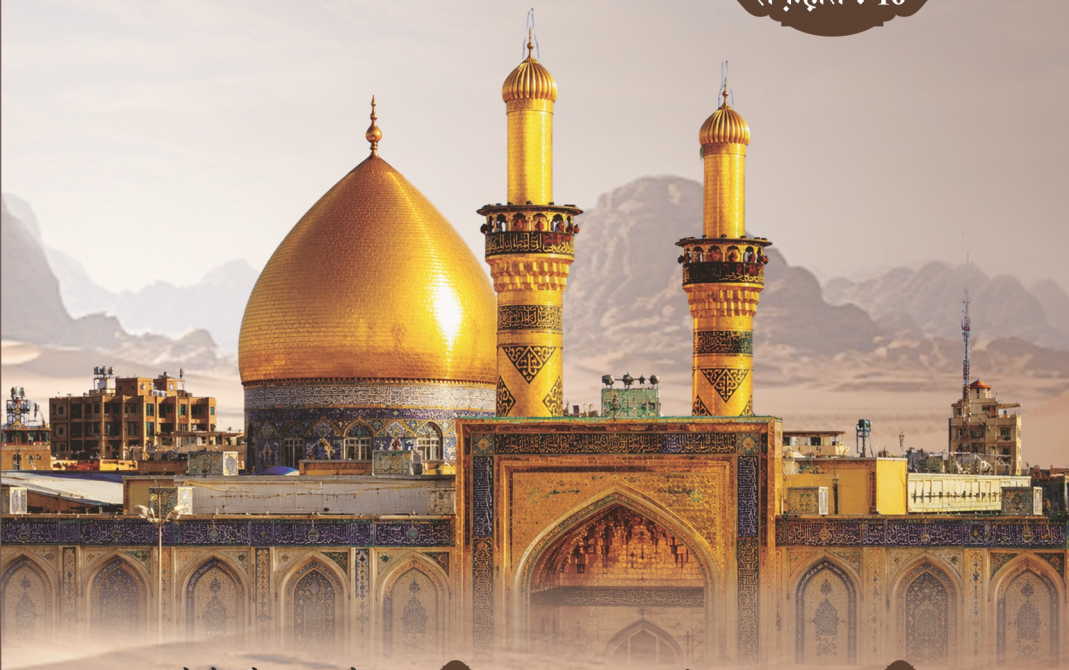

अहले बैत से मुराद कौन ? 03
पच्चीस मरतबा पैदल ह़ज 08
ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें 05
अ़क़ीदत के इ़ज़्हार का बेहतरीन ज़रीआ़ 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

फ़ज़ाइले अहले बैत

दुआए अ़त्तार : या रब्बे मुस्तफ़ा ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "फ़ज़ाइले अहले बैत" पढ़ या सुन ले उसे फ़ैज़ाने अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से ख़ूब मालामाल फ़रमा और उसे मां बाप और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا نَسِیْتُمْ شَیْئًا فَصَلُّوْا عَلَیَّ تَذْکُرُوْہُ اِنْ شَآءَ اللّٰہ यानी जब तुम कोई चीज़ भूल जाओ तो मुझ पर दुरूद भेजो اِنْ شَآءَاللّٰہ याद आ जाएगी। (القول البدیع، ص427، حدیث:53)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मोह़र्रम शरीफ़ एक मुक़द्दस और ह़ुर्मत वाला महीना है और इस की 10 तारीख़ को बहुत से तारीख़ी वाक़िआ़त रूनुमा हुए, बिल ख़ुसूस सिन 61 हिजरी में आ़शूरा के दिन बहुत ज़ियादा ख़ूनी और अफ़सोस नाक वाक़िआ़ हुवा। हमारे यहां आ़शूरा के दिन को यादगार के त़ौर पर लोग बहुत ज़ियादा मनाते हैं और नज़्रो नियाज़ के ज़रीए अहले बैते अत़्हार के लिये ख़ुसूसी ईसाले सवाब का एहतिमाम करते हैं। अहले बैते अत़्हार की शान को उजागर करने के लिये मसाजिद में म़हाफ़िल का एहतिमाम किया जाता है। अहले बैते अत़्हार की शान के क्या कहने ! आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम

अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के भाई जान, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने अहले बैत की शान में बड़ी प्यारी मन्क़बत लिखी है, जो मुझे बहुत पसन्द है क्यूंकि आप के कलाम भी शरीअ़त के बिल्कुल मुत़ाबिक़ होते हैं, ह़ुसूले बरकत के लिये इस मन्क़बत के चन्द अश्आ़र पेशे ख़िदमत हैं :

बाग़े जन्नत के हैं बहरे मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां
आयए तत़हीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

उन के घर में बे इजाज़त जिब्रईल आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अहले बैत

रज़्म का मैदां बना है जल्वा गाहे ह़ुस्नो इ़श्क़
करबला में हो रहा है इम्तिह़ाने अहले बैत

ऐ शबाबे फ़स्ले गुल येह चल गई कैसी हवा
कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अहले बैत

किस शक़ी की है ह़ुकूमत हाए क्या अन्धेर है !
दिन दहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत

ख़ुश्क हो जा ख़ाक हो कर ख़ाक में मिल जा फ़ुरात
ख़ाक तुझ पर देख तो सूखी ज़बाने अहले बैत

तेरी क़ुदरत जानवर तक आब से सैराब हों
प्यास की शिद्दत से तड़पे बे ज़बाने अहले बैत

फ़ात़िमा के लाडले का आख़िरी दीदार है
ह़श्र का हंगामा बरपा है मियाने अहले बैत

वक़्ते रुख़्सत कह रहा है ख़ाक में मिलता सुहाग
लो सलामे आख़िरी ऐ बेवगाने अहले बैत

बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ ह़सन !
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

(ज़ौक़े नात, स. 100-103)

ऐ आ़शिक़ाने अहले बैत ! अल्लाह पाक ने क़ुरआने अ़ज़ीम में अहले बैते अत़्हार की तारीफ़ फ़रमाई और उन की शान में आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَ یُطَهِّرَكُمْ تَطْهِیْرًا ﴿۳۳﴾ (پ:22،الاحزاب:33)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।

ह़ज़रते अ़म्र बिन सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : येह आयते तत़हीर (यानी पाकी बयान करने वाली आयत) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के घर में नाज़िल हुई और जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا और बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को बुलाया, उन तीनों को अपनी चादर मुबारक में छुपा लिया और दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह ! येह मेरे अहले बैत हैं, इन से नजासत को दूर फ़रमा और इन्हें पाको साफ़ कर दे। उस वक़्त मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते अत़्हर के पीछे थे।

(ترمذی، 5/141، حدیث:3216 ملتقطاً)

अहले बैत से मुराद कौन ?

अहले बैत से मुराद कौन हैं ? इस ह़वाले से ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस से मुराद उम्महातुल मोमिनीन, बीबी फ़ातिमा, मौला अ़ली और ह़सनैने करीमैन رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हैं।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा 22, अल अह़ज़ाब, तह़तल आयह : 33, स. 780)

"आयए तत़हीर" की त़रफ़ इशारा करते हुए मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां आयए तत़हीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

अफ़्ज़लिय्यत में तरतीब

ऐ आ़शिक़ाने अहले बैत ! जिन की शान येह हो कि उन के घर में ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام भी बे इजाज़त नहीं जाते, उन के साथ लोगों ने कैसा सुलूक किया ! दुनिया की मह़ब्बत, दुनिया परस्ती और अपने इक़्तिदार को बचाने की ख़ातिर उन पर मज़ालिम के पहाड़ तोड़े गए।

ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का मरतबा बहुत बुलन्द है मगर हम अहले सुन्नत के नज़्दीक रुत्बे के लिह़ाज़ से तरतीब कुछ इस त़रह़ है :

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तमाम सह़ाबए किराम आला व अदना (और उन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं, बादे अम्बिया व मुर्सलीन, तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्न व मलक (यानी इन्सानों, जिन्नों और फ़रिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अकबर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आज़म, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم, जो शख़्स मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को (ह़ज़रते) सिद्दीक़ या फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से अफ़्ज़ल बताए, गुमराह बद मज़हब है । ख़ुलफ़ाए अरबआ़ राशिदीन के बाद बक़िय्या अ़शरए मुबश्शरा व ह़ज़राते ह़सनैन व अस्ह़ाबे बद्र व अस्ह़ाबे बैअ़तुर्रिज़वान के लिये अफ़्ज़लिय्यत है। (बहारे शरीअ़त, 1/241,249,254, ह़िस्सा : 1)

शाने ह़सनैने करीमैन

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो बन्दा (अल्लाह पाक का) जितना मह़बूब होता है उस का इम्तिह़ान भी उतना कड़ा होता है नीज़ जितने दरजात बढ़ते चले जाते हैं इम्तिह़ान भी उतना सख़्त होता चला जाता है, इसे यूं समझिये ! पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं क्लास का इम्तिह़ान इतना सख़्त नहीं होता लेकिन मैट्रिक और उस के बाद वाली क्लासिज़ का इम्तिह़ान ज़ियादा सख़्त होता है तो यूं जितनी क्लास ऊपर होती चली जाती है इम्तिह़ान उतना सख़्त और मुश्किल होता चला जाता है और फिर मुश्किल इम्तिह़ान के बाद जो सनद मिलती है उस की अहमिय्यत भी उतनी ज़ियादा होती है । ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का इम्तिह़ान भी बड़ा सख़्त था और वोह अपने इम्तिह़ान में कामयाब रहे । अल्लाह पाक ने ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को बड़ी शानें अ़ता फ़रमाई, उन की शान में बहुत सी रिवायात और ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त हैं, ह़ुसूले बरकत के लिये उन में से चन्द पेशे ख़िदमत हैं :

रोने की आवाज़ सुन कर तशरीफ़ ले आए

बचपन में एक रोज़ सय्यिदुश्शुहदा इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के रोने की आवाज़ रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक कानों में पहुंची तो आप सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : बेटी ! इसे मत रुलाया करो क्यूंकि इस के रोने से मुझे दिली सदमा होता है।

(معجم کبیر، 3/116، حدیث:2847 ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا बारगाहे इलाही में बहुत ज़ियादा मक़्बूल थे और अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन से बेह़द मह़ब्बत फ़रमाते थे, दोनों ह़ज़रात की ज़िन्दगी अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ताअ़त ही में गुज़री, लिहाज़ा जो मुसलमान अ़क़ाइद की दुरुस्ती के साथ साथ उन दोनों शहज़ादों से ह़क़ीक़ी मानों में मह़ब्बत करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ उस के भी वारे न्यारे हो जाएंगे।

ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें

ऐ आ़शिक़ाने अहले बैत ! ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا परहेज़गारी और सख़ावत में भी अपनी मिसाल आप थे, इस के साथ साथ येह ह़ज़रात साह़िबे करामत भी थे चुनान्चे एक मरतबा ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ सफ़र के दौरान खजूरों के एक ऐसे बाग़ से गुज़रे जिस के तमाम दरख़्त ख़ुश्क हो चुके थे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी उस सफ़र में आप के साथ थे, ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उस बाग़ में पड़ाव डाला (यानी क़ियाम किया), ख़ुद्दाम ने एक सूखे दरख़्त के नीचे आराम के लिये बिछौना बिछा दिया, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : ऐ नवासए रसूल ! काश ! इस सूखे दरख़्त पर ताज़ा खजूरें होतीं तो हम सैर हो कर खाते, येह सुन कर ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने

आहिस्ता आवाज़ में कोई दुआ पढ़ी जिस की बरकत से चन्द लम्हों में वोह सूखा दरख़्त सर सब्ज़ो शादाब हो गया और उस में ताज़ा पकी हुई खजूरें आ गईं। येह मन्ज़र देख कर एक शुतुरबान (यानी ऊंट हांकने वाला) कहने लगा : येह सब जादू का करिश्मा है, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने उसे डांटा और फ़रमाया : तौबा कर, येह जादू नहीं बल्कि शहज़ादए रसूल की दुआए मक़्बूल है।

(شواہد النبوۃ، ص227 ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इतनी अ़ज़ीमुश्शान हस्ती होने के बावुजूद ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ां व तरसां रहा करते थे, चुनान्चे

ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की गिर्या व ज़ारी

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : एक रात मैं ख़ानए काबा में इ़बादत कर रहा था कि मैं ने एक शख़्स को देखा जो कम्बल में अपना मुंह छुपाए हुए काबतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े पर इस त़रह़ रो रो कर दुआ मांग रहा था कि जिस त़रह़ कोई बहुत बड़ा गुनाहगार या जिस शख़्स से कोई बहुत बड़ा गुनाह सरज़द हो जाता है तो वोह हैबत से रो रो कर तौबा कर रहा होता है। बहर ह़ाल वोह शख़्स सारी रात चेहरे पर कम्बल लपेटे रोता रहा। मैं ने समझा कि इस बेचारे से कोई बड़ा जुर्म सरज़द हुवा है और मुझे उस पर बड़ा तरस आया। जब वोह जाने लगा तो मुझ से रहा न गया और मैं ने उसे पुकार कर कहा : ऐ भाई ! ज़रा अपना चेहरा दिखा दो और अपना नाम भी बता दो ताकि मैं तुम्हारे लिये दुआए मग़्फ़िरत करूं। मेरी बात सुन कर वोह शख़्स ठहर गया, उस ने अपने चेहरे से चादर हटाई और इरशाद फ़रमाया : मेरा नाम ह़सन है। चूंकि ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को पहचानते थे, जैसे ही चेहरा देखा तो एक दम चौंक पड़े कि येह तो सय्यिदुल अस्खिया, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, नवासए अह़मदे मुज्तबा इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ हैं।

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं नादिम हो कर दौड़ा और उन के क़दमों में गिर कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर ! आप इतने ऊंचे घराने से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और आप की शाने तक़्वा और शाने इ़बादत के क्या कहने ! इस के बावुजूद आप इस क़दर गिर्या व ज़ारी करते हैं ! येह सुन कर ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه पर एक बार फिर रिक़्क़त त़ारी हुई और रोते हुए फ़रमाने लगे : ऐ ह़सन बसरी ! येह वोह बारगाह है कि जहां बड़े बड़े लोग अपना क़दम रखते हुए डरते हैं। मेरे नानाजान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी अम्मीजान से कुछ इस त़रह़ इरशाद फ़रमाते थे : ऐ फ़ात़िमा ! येह मत समझना कि तू मेरी बेटी है बल्कि अ़मल कर, अ़मल कर, अ़मल कर। ऐ ह़सन बसरी ! ख़ूब समझ लो कि जब सय्यिदतुन्निसा, नूरे चश्मे मुस्त़फ़ा, सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा को अ़मल की ह़ाजत है तो फिर मैं क्या हस्ती रखता हूं ? ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझ पर ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه की रिक़्क़त अंगेज़ गुफ़्तगू का बहुत असर हुवा। मेरी चीख़ निकल गई और मैं बेहोश हो कर गिर गया, जब होश आया तो ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه वापस तशरीफ़ ले जा चुके थे। (औराक़े ग़म, स. 298 मुल्तक़त़न)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को येह फ़रमाना कि "अ़मल करो" दर अस्ल अ़मल की ताकीद और तरग़ीब है वरना एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहले कबाइर (यानी कबीरा गुनाह करने वालों) की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। (ترمذی، 4/198، حدیث:2444 ماخوذاً) जब कबीरा गुनाह करने वालों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे तो फिर अपने अहले बैत को कैसे छोड़ेंगे ? अहले बैते अत़हार की शान तो येह है कि हम जैसे गुनाहगार उन के दामन में पनाह लेंगे। याद रखिये ! जिस की जितनी

ज़ियादा शान होती है वोह अ़मल भी उतना ज़ियादा करता है। बहर ह़ाल उम्मत के लिये ताकीद है कि वोह किसी सूरत नेक आमाल से ग़फ़्लत न करे।

पच्चीस मरतबा पैदल ह़ज

ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा और ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने 25 बार पैदल ह़ज किये। (مستدرک، 4/160، حدیث: 4841۔ معجم کبیر، 3/115، حدیث: 2844)

सुवारियों के होते हुए पैदल क्यूं ?

ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से किसी ने अ़र्ज़ की : सुवारियों के होते हुए आप पैदल क्यूं जाते हैं ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : मुझे शर्म आती है कि मैं अपने मालिको मौला की बारगाह की त़रफ सुवार हो कर जाऊं।

(معرفۃ الصحابۃ، 2/7، حدیث: 1769 ملتقطاً)

ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया

एक बार ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने ख़ादिम को खाना लाने का हुक्म दिया, जब वोह खाना ले कर आप के क़रीब पहुंचा तो इत्तिफ़ाक़ से उसे ठोकर लगी जिस के बाइ़स वोह खाना ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर जा गिरा और आप के कपड़े उस से आलूदा हो गए। चूंकि वोह ख़ादिम क़ुरआने पाक को जानने वाला था इस लिये उस की ज़बान पर येह आयते मुबारका जारी हो गई : ﴿وَالْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ﴾ (پ 4، اٰل عمرٰن: 134) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले।" यानी मोमिन की शान येह है कि वोह दरगुज़र करने वाला होता है न कि मौक़ा की ताक में रहने वाला कि जैसे ही मौक़ा मिले फ़ौरन बदला ले ले जैसा कि हम लोगों का त़रीक़ा है कि अगर हमें किसी ने चार आदमियों के सामने डांट दिया हो तो हम उसे हज़ार आदमियों के सामने ज़लील करने की कोशिश करते हैं जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन

رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم अपने नफ़्स की ख़ातिर किसी से बदला नहीं लेते थे। बहर हाल जब ख़ादिम ने इस आयते मुबारका की तिलावत की तो उसी वक़्त ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ की ज़बाने मुबारक पर जारी हुवा : قَدْ عَفَوْتُ عَنْكَ यानी मैं ने तुझे मुआफ़ किया। ख़ादिम ने येह सुनते ही आयते मुबारका का आख़िरी ह़िस्सा तिलावत किया : ﴿ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴾ (پ 4، اٰلِ عمران: 134) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और नेक लोग अल्लाह के मह़बूब हैं।" इस पर ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : اَنْتَ حُرٌّ لِوَجْهِ اللّٰهِ यानी तू अल्लाह के लिये आज़ाद है।

(تفسیر روح البیان، پ4، اٰلِ عمران، تحت الآیۃ: 134، 2/95 ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! कपड़े ख़राब हो जाने के बा वुजूद ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ अपने ख़ादिम से किस त़रह़ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए। ग़ौर कीजिये ! अगर हमें अपने किसी नौकर या मुलाज़िम की ठोकर लग जाए तो हमारे मुंह से फ़ौरन इस त़रह़ के जुम्ले निकलते हैं : "अन्धे हो क्या ? देख कर नहीं चल सकते ? आख़िर इतनी जल्दी क्या थी ? तुम ने मेरे कपड़ों का सत्यानास कर दिया वग़ैरा वग़ैरा।" बाज़ सेठ ऐसे मौक़े पर दो चार गालियां भी निकाल देते हैं और यूं मुलाज़िम गुनाहगार हो या न हो अलबत्ता सेठ ज़रूर गुनाहगार हो जाता है। देखिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم कैसे बा अख़्लाक़ हुवा करते थे कि ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने अपने ख़ादिम को उस के जुर्म की कितनी प्यारी सज़ा दी कि उसे आज़ाद कर दिया। अल्लाह पाक हमें इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ऐ आशिक़ाने अहले बैत ! ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا दोनों शहज़ादे बहुत ज़ियादा अ़ज़मत वाले थे और उन के इम्तिह़ानात भी उतने ही ज़ियादा सख़्त हुए, चुनान्चे

ज़हर दे कर शहीद किया गया

ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को ज़हर दे कर शहीद किया गया, उन के सब्रो ज़ब्त का येह आ़लम था कि उन्हों ने आख़िर दम तक ज़हर देने वाले का नाम नहीं बताया। क्यूंकि गवाही ज़रूरी है और अगर गवाह पेश न किया जाए तो फ़र्दे जुर्म आ़इद नहीं होती, इस लिये किसी पर ज़हर देने का इल्ज़ाम नहीं लगाया जा सकता बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने ज़हर देने वाले का नाम नहीं बताया कि कहीं ऐसा न हो मैं अपने क़ियास से किसी का नाम बता दूं और उस ने ज़हर न दिया हो तो उस को बिला वजह सज़ा मिल जाए, और आख़िरेकार आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ शहीद हो गए।

शहादते अ़ली असग़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ

दीगर शुहदाए करबला के साथ मैदाने करबला में नन्हे अ़ली असग़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ भी मौजूद थे, जिन की उ़म्र उस वक़्त छे माह थी और प्यास की वजह से उन की ज़बान सूख कर कांटा हो गई थी, लेकिन यज़ीदी लश्कर पर शक़ावत ग़ालिब आई और उन में से एक ज़ालिम और बे रह़म ह़रमला बिन काहिल नामी शख़्स ने तीर चलाया जो नन्हे अ़ली असग़र के ह़लक़ में जा लगा ! उन्हों ने एक झुर झुरी ली और तड़प कर ठन्डे हो गए। (औराक़े ग़म, स. 487)

देखा जो येह नज़ारा, कांपा है अ़र्श सारा — असग़र के जब गले पर ज़ालिम ने तीर मारा
ऐ ज़मीने करबला येह तो बता क्या हो गया — नन्हा अ़ली असग़र तेरी गोदी में कैसे सो गया

आह ! कितना अ़जीबो ग़रीब नज़ारा था कि छे माह के बच्चे को भी नहीं छोड़ा गया ! इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को इस का किस क़दर सदमा हुवा होगा ! मज़ीद येह कि इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अपने नौजवान बेटे, हम शक्ले मुस्त़फ़ा ह़ज़रते अ़ली अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ, अपने भतीजे ह़ज़रते

क़ासिम बिन ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا और अपने दो भांजों ह़ज़रते मुह़म्मद और ह़ज़रते औ़न رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا को अपने सामने शहीद होते देखा बल्कि सारे ख़ानदान को अपने सामने कटते देखा।

शहादते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इतने सदमों के साथ साथ अगर भूक प्यास भी हो तो आदमी बिल्कुल टूट जाता है लेकिन इस के बावुजूद इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के पाए इस्तिक़लाल में ज़र्रा बराबर लग़्ज़िश न आई और अपनी तल्वारे ज़ुल फ़िक़ार ले कर मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ ले गए और दुश्मनों पर टूट पड़े, दुश्मनों ने घेरा तंग किया, बिल आख़िर सय्यिदुश्शुहदा, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, जिगर गोशए फ़ात़िमा, नूरे चश्मे मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ 10 मोह़र्रम शरीफ़ को जुमुआ़ के दिन नमाज़े ज़ोहर से पहले तीन दिन भूके प्यासे रह कर, अपनी आंखों के सामने अपने ख़ानदान के नौशिगुफ़्ता फूलों को ख़ाक व ख़ून में लिथड़ा देख कर और उन की शहादतों के सदमे सह कर ज़ख़्मी ह़ालत में ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। शिम्रज़िल जौशन आप के सीनए मुबारक पर चढ़ गया, क़रीब था कि वोह आप का सरे अक़्दस तने अन्वर से जुदा कर देता लेकिन आप ने उस से फ़रमाया : मुझे अपने माबूद की बारगाह में आख़िरी सज्दा कर लेने दो। वोह मुबारक सीने से उतर गया और आप सज्दे में चले गए, सज्दे ही की ह़ालत में शिम्रज़िल जौशन ने आप का सरे अक़्दस तन से जुदा कर दिया।

(الکامل فی التاریخ، 3/430، 432ملتقطاً)

शमशीर बकफ़ क़ातिल हो खड़ा और कोई रहे सज्दे में पड़ा
कहती थी ज़मीने कर्बो बला इस शान का सज्दा खेल नहीं

ऐ सय्यिदुश्शुहदा, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को मानने वालो ! उन की नियाज़ खाने और खिलाने वालो ! तुम जिन की नियाज़ हुसूले बरकत के लिये शौक़ से खाते हो उन्होंने सज्दे की ह़ालत में सर कटवाया था लिहाज़ा सिर्फ़ नियाज़ी न बनो नमाज़ी भी बनो। याद रहे ! बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ के ईसाले सवाब के लिये जो खाना पकाया जाता है उसे एह़तिरामन नियाज़ कहा जाता है और ऐसा कहने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं बल्कि बिल्कुल जाइज़ है। नियाज़ का खाना अल्लाह पाक ही के नाम का होता है लेकिन अगर वोह बुज़ुर्गों के ईसाले सवाब के लिये हो तो उसे "नियाज़" और आ़म लोगों के ईसाले सवाब के लिये हो तो "फ़ातिह़ा" कह दिया जाता है। हम सय्यिदुश्शुहदा की नियाज़ का खिचड़ा शौक़ से खाते, शरबत और ठन्डा पानी पीते मगर नमाज़ें क़ज़ा करते हैं जब कि इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ तीन दिन भूके प्यासे रह कर शहीद हुए लेकिन मैदाने करबला में बाक़ाइ़दा नमाज़ें अदा करते रहे। अगर्चे इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ह़ालते इम्तिह़ान में थे मगर फिर भी आख़िरी वक़्त उन्हों ने दुनिया को दर्स दिया कि मुझे यज़ीद ने झुकाने की बहुत कोशिश की लेकिन मैं ने अपने घराने के बच्चों को क़ुरबान कर दिया और अपने ख़ून का आख़िरी क़त़रा भी बहा दिया मगर यज़ीद के आगे नहीं झुका बल्कि अपने रब की बारगाह में झुका हूं।

ऐ आ़शिक़ाने अहले बैत ! पता चला मोमिन अल्लाह पाक के सिवा किसी के आगे नहीं झुकता, ख़्वाह कोई कितने ही ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े, मोमिने कामिल अपने आप को सम्भालने में कामयाब हो जाता है। बहर ह़ाल येह इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का ही ह़िस्सा था और अल्लाह

पाक की दैन थी कि वोह इम्तिहान में पूरी त़रह़ कामयाब हुए। مَعَاذَ اللّٰه ! अगर इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه यज़ीद की बैअ़त कर लेते और उस के आगे झुक जाते तो आने वाली उम्मत के लिये ज़ालिम के सामने झुक जाना दलील बन जाता लेकिन वोह न झुके और उन्हों ने कलिमए ह़क़ की सरबुलन्दी जारी रखी यहां तक कि शहीद हो कर हमेशा की ज़िन्दगी पा गए। बिल आख़िर एक वक़्त वोह भी आया कि यज़ीद और उस का लश्कर तहस नहस हो कर तबाहो बरबाद हो गया और आज उस से हमदर्दी करने के लिये कोई भी तय्यार नहीं लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की अ़क़ीदत की शम्अ़ आज भी करोड़ों दिलों में रौशन है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने दीन के लिये क़ुरबानी दी और उन्हों ने अपना तन मन धन बल्कि सारा घर राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दिया जबकि हम उन की क़ुरबानियों की दास्तानें सुनते, जोश में आ कर नारे लगाते और फिर दीन का काम करने के बजाए मुत़मइन हो कर बैठ जाते हैं। येह अल्लाह पाक का करम है कि दीने इस्लाम हम तक सह़ीह़ मानों में पहुंचा लेकिन अब आहिस्ता आहिस्ता दीन से दूरी होती चली जा रही है, अगर हमारी येही ह़ालत रही तो हमारी नस्लों का क्या होगा ? कई ममालिक ऐसे हैं जो पहले इस्लाम के मराकिज़ थे लेकिन जब मुसलमानों ने ग़फ़्लत बरती, "दुनिया" को ज़िन्दगी का मक़्सद बनाया और सिर्फ़ दुन्यवी इ़ल्म ह़ासिल किया तो दीन से दूरी के सबब वहां मौजूद मसाजिद पर ताले पड़ गए। आज हमारी ह़ालत भी कुछ ऐसी ही है, हम भी सिर्फ़ दुनिया का इ़ल्म ह़ासिल कर रहे हैं, हमें छे कलिमे बल्कि ईमाने मुफ़स्सल और

ईमाने मुजमल भी याद नहीं, नमाज़ पढ़ते हैं मगर नमाज़ के फ़राइज़ मालूम नहीं होते, वुज़ू करते हैं लेकिन वुज़ू के फ़राइज़ का पता नहीं होता, येही ह़ाल दीगर मुआ़मलात का भी है। औलाद की सह़ीह़ मानों में तरबियत न करने की वजह से सूरते ह़ाल येह है कि जिस बाप ने पेट काट कर पाला था बेटा उस का जनाज़ा नहीं पढ़ा सकता क्यूंकि वोह मॉडर्न होता है, उसे दुरुस्त त़रीक़े से नमाज़ पढ़ना नहीं आती, उस ने कभी भूल कर भी उस त़रफ़ ग़ौर नहीं किया होता कि मुझे जनाज़े की दुआ भी याद करनी चाहिये और उसे येह भी पता नहीं होता कि नमाज़े जनाज़ा में कितनी तक्बीरें कही जाती हैं ? बहुत से लोग जब नमाजे जनाज़ा पढ़ने के लिये खड़े होते हैं तो बेचारे कन अंखियों से एक दूसरे को देख कर नमाज़ पूरी करते हैं और बाज़ बेचारे तक्बीरात के वक़्त नमाज़े ईद की त़रह़ कानों तक हाथ उठाते हैं तो यूं बस नमाज़े जनाज़ा में रस्मी त़ौर पर शरीक होते हैं। ग़ुस्ले मय्यित की भी कुछ ऐसी ही सूरते ह़ाल है कि घर में बाप की लाश रखी होती है लेकिन बेटा ग़ुस्ल नहीं दे सकता क्यूंकि उस ने कभी सीखा नहीं होता कि मय्यित को कैसे ग़ुस्ल दिया जाता है ? बाप ने भी ज़िन्दगी भर कभी बेटे को ग़ुस्ले मय्यित सीखने की तरग़ीब नहीं दिलाई होती और फिर बेचारे को मरने के बाद उस का ख़म्याज़ा भुगतना पड़ता है। देखिये ! अगर बेटा बाप को ग़ुस्ल देगा तो उस में रिक़्क़त होगी, सोज़ होगा, दर्द होगा और उस की ख़्वाहिश होगी कि मैं अपने वालिद को ज़ियादा से ज़ियादा सुन्नतों का ख़याल रखते हुए ग़ुस्ल दूं लिहाज़ा इस मक़्सद के लिये वोह किताबों से ग़ुस्ल का त़रीक़ा देख कर उस के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल देगा जबकि उस के बरअ़क्स कोई दूसरा आदमी सुन्नतों का इतना लिह़ाज़

नहीं करेगा ? यूंही अगर बेटा बाप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएगा तो उस की आंख़ों से आंसू भी छलक रहे होंगे और उस पर रिक़्क़त व सोज़ की कैफ़िय्यत भी त़ारी होगी जब कि कोई दूसरा इस त़रह़ रिक़्क़तो सोज़ के साथ जनाज़ा नहीं पढ़ाएगा।

अ़क़ीदत के इज़्हार का बेहतरीन ज़रीआ़

ऐ आ़शिक़ाने अहले बैत ! इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इस लिये क़ुरबानी दी कि वोह इस्लाम को बाक़ी रखना और इस्लाम के शजर को हरा भरा देखना चाहते थे लेकिन अफ़सोस ! हम अपने हाथों सब कुछ पामाल करते चले जा रहे हैं।

जहां हमारी सारी तालीम, सारा कारोबार और सारे उ़लूमो फ़ुनून दुनिया के लिये हैं वहां ऐ काश ! हम अपना थोड़ा सा वक़्त इस इस्लाम की ख़ात़िर भी निकालें जिसे बचाने के लिये इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने "सय्यिदुश्शुहदा" का लक़ब पाया और अपने ख़ून से उस की आबयारी की।

ऐ काश ! हम भी अपन बच्चों को, अपने घर बार और कारोबार को छोड़ना सीखें और इमामे आ़ली मक़ाम के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हम भी दीन के लिये सफ़र इख़्तियार करें, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ईसाले सवाब के लिये अल्लाह की राह में निकलना है, सुन्नतों के रास्ते पे चलना है, ख़ुद भी सुन्नतें सीखनी हैं और दूसरों को भी सिखानी हैं। अल्लाह पाक हम सब को इमामे आ़ली मक़ाम के नक़्शे क़दम पर चल कर इस्लाम के लिये क़ुरबानियां पेश करने का जज़्बा मर्ह़मत फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	01
अहले बैत से मुराद कौन ?	03
अफ़ज़लिय्यत में तरतीब	03
शाने ह़सनैने करीमैन	04
रोने की आवाज़ सुन कर तशरीफ़ ले आए	05
ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें	05
ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की गिर्या व ज़ारी	06
पच्चीस मरतबा पैदल ह़ज	08
सुवारियों के होते हुए पैदल क्यूं ?	08
ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया	08
ज़हर दे कर शहीद किया गया	10
शहादते अ़ली असग़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ	10
शहादते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ	11
अ़क़ीदत के इज़्हार का बेहतरीन ज़रीआ़	15

अगले हफ़्ते का रिसाला

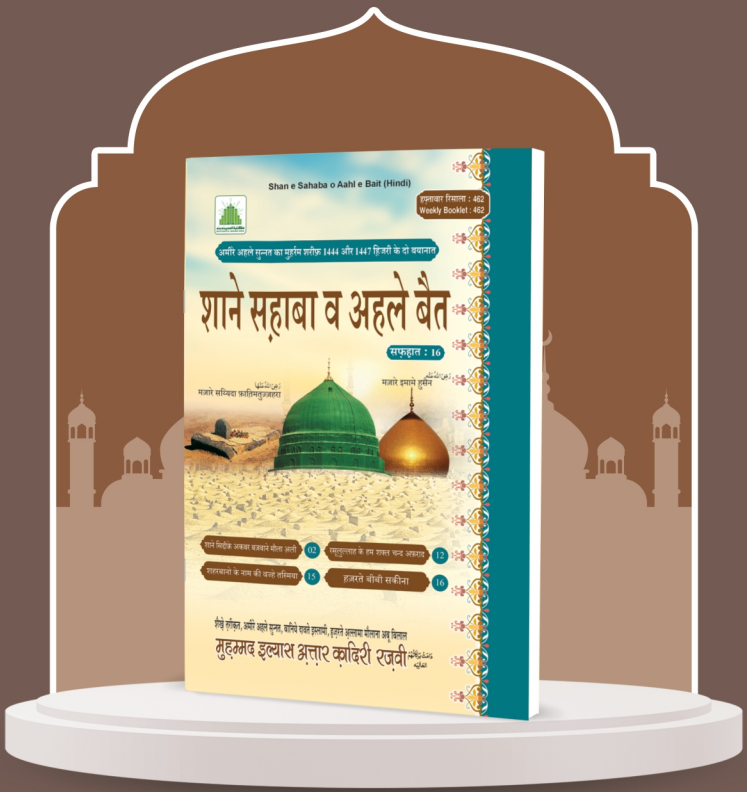

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025